वृहत्तर गुवाहाटी मारवाड़ी समाज के कार्यक्रम में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का सम्बोधन

दिनांक 30 अक्टूबर 2023, रविवार	**समय : 4.15 PM**	**स्थान : रेडिशन ब्लू होटल**

- भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी व सम्माननीय श्रीमती सुदेश धनखड़ जी,
- असम के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. हिमन्त बिश्व शर्मा डांगरिया,
- असम सरकार के माननीय मंत्री एवं वृहत्तर गुवाहाटी मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधि श्री अशोक सिंघल जी,
- असम सरकार के मुख्य सचिव श्री पवन कुमार बरठाकुर जी,
- पुलिस महानिदेशक श्री जी.पी. सिंह जी,
- वृहत्तर गुवाहाटी मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधि श्री विजय सिंह डागा जी
- असम के प्रवासी राजस्थानियों
- देवियों और सज्जनों

नमस्कार,

वृहत्तर गुवाहाटी मारवाड़ी समाज द्वारा माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर मुझे काफी खुशी हो रही है।

माननीय उप-राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी एवं श्रीमती धनखड़ जी का मैं हृदय से अभिनन्दन और स्वागत करता हूँ। मुझे यह कहते हुए विशेष हर्ष हो रहा है कि उपराष्ट्रपति जी एक श्रेष्ठ सांसद, केन्द्रीय राज्य मंत्री और सजग विधायक, संसदीय एवं संवैधानिक विषयों के विशेषज्ञ, विद्वान विधिवेत्ता, प्रखर अधिवक्ता और एक राज्यपाल के रूप में सदैव सक्रिय रहे हैं। सौभाग्य की बात है कि दसवीं राजस्थान विधान सभा में हम दोनों ने विधायक के रूप में एक साथ काम किया।

विधिक क्षेत्र की विलक्षण योग्यता के कारण आप भारतीय एवं अनेक अन्तर्राष्ट्रीय विधिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। आपने संवैधानिक एवं कानूनी मुद्दों पर देश की प्रमुख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों से अपने निष्णात ज्ञान एवं अध्यवसायी प्रवृत्ति को परिलक्षित किया है।

उपराष्ट्रपति के पद पर आसीन होने से पूर्व आपने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के रूप में अपनी सदाशयता, मधुर व्यवहार, सद्बुद्धि एवं तर्कसंगत युक्तियों द्वारा विषम परिस्थितियों में भी अपने दायित्वों का निवर्हन बड़ी कुशलता से किया है, जो हमें प्रेरित करने वाला है।

मित्रों,

करीब तीन सौ वर्ष पूर्व और एक नये वर्ग के व्यक्तियों का असम में आना प्रारंभ हुआ, जिनकी बुद्धि कुशाग्र थी, विचार स्वच्छ थे, सहयोग की भावना से ओतप्रोत थे, धर्म के प्रति सजग थे, निष्ठा के धनी थे, मेहनत ही उनके जीवन का लक्ष्य था, कष्ट, सहिष्णुता उनको विरासत में मिली थी और व्यापार करने में निपुणता थी। उनकी भाषा, वेशभूषा, खान-पान, जीवन शैली व जीवन दर्शन भिन्न था, फिर भी इस प्रदेश में आकर मूल निवासियों के बीच रहने का अदम्य साहस था। उनका हथियार था उच्च नैतिक आदर्श व सहअस्तित्व की भावना।

स्थानीय भाषा बोलने में असमर्थ, मगर सरल व्यवहार कुशलता के कारण अपने भावों को महसूस करवाने में दक्ष थे, फलतः एक मूक रिश्ता कायम हो गया। आने वाले इस वर्ग को “मारवाड़ी” के नाम से पहचाना जाता था। राजस्थान, हरियाणा, मालवा आदि प्रांतों से आनेवाले सभी वर्गों को स्थानीय लोग “मारवाड़ी” के नाम से ही जानते थे ।

मारवाड़ी जाति में अपनी निष्ठा, ईमानदारी, कष्टसहिष्णुता, लगन, समरसता तथा सद्भावना के बल पर किसी भी अनजान प्रदेश में अनजान व्यक्तियों के बीच संभावना तलाश कर अपने लिये स्थान बनाने का गुण था। वे छोटे से छोटे स्तर से व्यापार शुरू करने में भी हिचकिचाते नहीं थे।

प्रवासियों की संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि सन् 1860 के बाद दिल्ली से कलकत्ता तक रेल लाईन चालू होने के बाद हुई। अंग्रेजों के जाने के बाद बहुत से चाय बागान मारवाड़ियों के हाथ में आ गए थे। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में व्यापार के द्वारा उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर ली थी एवं नए जोखिम उठाकर छोटे उद्योगों की तरफ आकर्षित हुए, जो असम की पैदावार पर निर्भर थे एवं उसकी सफलता की संभावना बहुत अधिक थी।

उन उद्योगों में राईस मिल, तेल मिल, आटा चक्की, मैदा मिल, रूई मिल, साबुन फैक्ट्री, चिड़वा मिल, माचिस फैक्ट्री, लकड़ी मिल्स, ईट और चुने के भट्टे, छापाखाने, बर्फ का कारखाना, छाता बनाना, साबुन, लोहे की बक्सा निर्माण इकाई, मोटर कार ट्रक एजेन्सी और मरम्मत कारखाना, चीनी मिल, सिनेमा उद्योग आदि थे।

नब्बे के दशक में मारवाड़ियों की भूमिका बड़े उद्योगों, ठेकेदारी व भवन निर्माण में भी दिखने लगी। व्यापार में सफलता के बाद समाज में शिक्षा के प्रति भी चेतना जागने लगी। तिनसुकिया से प्रारम्भ होकर गौहाटी में स्कूल खुलने लगे। गौहाटी में लालचंद गोयंका स्कूल, शिशु निकेतन तथा धानुका बालिका विद्यालय की स्थापना हुई।

सन् 1960-70 के दशक में असम में मारवाड़ी बुद्धिजीवियों का प्रभाव दिखने लगा। सैकड़ों युवाओं ने वकालत, चार्टड एकाउन्टेसी, डॉक्टरी, इंजिनियरिंग आदि की शिक्षा प्राप्त की। काफी बड़ी संख्या में लड़कियों ने चार्टर्ड एकाउन्टेंट, कंपनी सेक्रेटरी, वकील, फेशन डिजाईनर, इंजिनियर, डॉक्टर अर्कीटेक्ट, इन्टीरियर डिजाइनिंग व कम्पनियों में जॉब से अपनी जीविका के लिए मार्ग प्रशस्त कर रही है।

असम में बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ, जो सैकड़ों करोड़ रुपये कर के रूप में प्रतिवर्ष देती है, वे मारवाड़ी कर सलाहकारों को नियुक्त करके उनकी सेवा लेती रहती है। बहुत बुद्धिजीवियों ने अनेक कानून की पुस्तकों की भी रचना की है और मासिक कानूनी निर्णयों की पत्रिका का भी प्रकाशन किया हैं।

अप्रवासियों में शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के फलस्वरूप कई युवकों का चयन प्रान्तीय सिविल सेवा तथा सीधे आईपीएस में होने लगा। कुछ युवक विभिन्न अदालतों में विभिन्न स्तरों पर न्यायाधीश के रूप में भी कार्यरत हैं।

स्व. ज्योति प्रसाद अग्रवाल, श्री छगनलाल जैन, स्व. जुगल किशोर केडिया, ऐसे अनेक प्रवासी मारवाड़ी थे, जनका नाम प्रवासी मारवाड़ी ही नहीं बल्कि समस्त असमवासी सम्मान से लेते हैं।

प्रवासी भारतीयों ने असम में न केवल अनेक मंदिरों के निर्माण किए, बल्कि दुर्गा पूजा में भी योगदान दिया। उनके द्वारा स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल, धर्मशाला, पुस्तकालाय, स्टेडियम की स्थापना में योगदान के अनगिनत उदाहरण हैं। तोलाराम बाफना अस्पताल में अब तक हजारों निशक्तजनों को निःशुल्क अत्याधुनिक कृत्रिम जयपुरी पैर लगाए जा चुके हैं।

किसी भी प्रवासी समाज की सफलता केवल धनोपर्जन से नहीं देखी जा सकती। स्थानीय समाज से स्वाभाविक रिश्ते बहुत आवश्यक है। उनकी भाषा को अपनाना, उनके धार्मिक सांस्कृतिक मूल्यों का आदर करना भी उतना ही आवश्यक है। प्रवासी समाज ने असमिया भाषा को अपनाया है। असमिया भाषा के अनेक लेखक मारवाड़ी हैं।

देश में स्वाधीनता संग्राम की लौ जब सर्वत्र जल रही थी तब असम भी अछूता नहीं रहा और अन्य भारतीयों की तर्ज पर मारवाड़ी समाज यद्यपि व्यापारिक समाज था, मगर राष्ट्र की आन-बान के लिए इसके भी सपूतों ने यज्ञ की अग्नि में आहूति देना नहीं भूले।

भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में मारवाड़ी जाति का देश स्वाधीनता के आंदोलन में बहुत बड़ा बलिदान रहा है। आंदोलन की अग्नि की भट्टी को प्रज्वलित रखने के लिये बहुत धन की आवश्यकता होती है जिसका एक बड़ा भाग मारवाड़ियों ने सर्वत्र मुक्त हस्त से दिया। भूमिगत आंदोलनकारियों को पनाह देकर आर्थिक मदद करने का कार्य अनेक मारवाड़ी परिवारों को करने का भी श्रेय है।

पिछले दशकों में घृणा और हिंसा का दौर और राजनैतिक दलों द्वारा व्यापारियों के विरुद्ध विषवमन काफी कम हो गया है। एक सशक्त असम और भारत के लिए आवश्यक है कि प्रवासी समाज स्थानीय समाज के साथ मिलकर पूर्ण समरसता के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग करें।

अंत में मैं पुनः अपनी ओर से, असम सरकार की ओर से माननीय उपराष्ट्रपति श्री धनखड़ जी एवं श्रीमती धनखड़ जी का हृदय से अभिनन्दन करता हूं। मैं वृहत्तर गुवाहाटी मारवाड़ी समाज को भी माननीय उपराष्ट्रपित श्री धनखड़ जी के सम्मान में यह कार्यक्रम आयोजित करने के लिए धन्यवाद देता हूं।

जय हिन्द।